

## अंतर्वस्तु

बुंदेलखंड : एक परिचय	2
प्रगति आख्या	3
बुन्देलखण्ड में उन्नतशील खेती	4
प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना का शुभारम्भ	5
• Bundelkhand Krishi Pradarshani Evam Gosthi	6
• Review of Rabi Pulses	6
• MDP programme	6
• Approval of ARYA Project	6
• International women Day	7
• International Pulse Year	7
• DG Visit at ICAR?ATARI, Kanpur	7
• Brain storming session	7
• Participation in National Symposium	7
• Sanction of Extra Mural Project	7
• Agricultural Science Congress	7
• FLD review meeting.	7
• Krishi Unnati Mela	7
• Director's Desk	8

२२ फरवरी, २०१६, नई दिल्ली

## अभिनंदन

डॉ. त्रिलोचन महापात्र

सचिव, कृषि अनुसंधान और शिक्षा एवं महानिदेशक, भाकृअनुप



डॉ त्रिलोचन महापात्र, सचिव, कृषि अनुसंधान और शिक्षा एवं महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का कार्यभार संभाल लिया है।

डॉ महापात्र की नियुक्ति प्रतिष्ठित भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली के निदेशक-सह-कुलपति के पद पर की गई थी। इससे पहले, वह राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान (सीआरआरआई), कटक के निदेशक के रूप में काम कर चुके हैं। उन्होंने लगभग 20 वर्षों तक राष्ट्रीय अनुसंधान केन्द्र-पादप जैव प्रौद्योगिकी, आईएआरआई, नई दिल्ली में शिक्षक और शोधकर्ता के रूप में कार्य किया। वह एक विश्व-ख्याति के आप्विक आनुवंशिकी और जीनोमिक्स के क्षेत्र में काम करने वाले वैज्ञानिक हैं।

डॉ महापात्र के 98५ से अधिक शोध पत्र ख्याति प्राप्त राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं व कई पुस्तक अध्याय भी हैं। उनके उपलब्धियों में विश्व में सर्वप्रथम किया गया 'डेवलपमेंट ऑफ फर्सट हाई यील्डिंग बासमती राइस वैरायटी रेसिस्टेंट टू बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट थ्रो मॉलिक्यूलर मार्कर असिस्टेड सिलेक्शन एंड फिजिकल मैपिंग एंड जीनोम सिक्वेंसिंग ऑफ राइस एंड टोमेटो" शामिल है।

वे भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी-भारत, इलाहाबाद और राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी, नई दिल्ली के मानद फेलो भी हैं।

भाकृअनुप-अटारी, कानपुर के समस्त वैज्ञानिक एवं अधिकारीगण

## बुंदेलखंड : एक परिचय



बुंदेलखंड में कुछ जिले उत्तर प्रदेश के तथा कुछ मध्य प्रदेश के हैं, वर्तमान में बुंदेलखंड क्षेत्र की स्थिति बहुत ही गंभीर है। यह क्षेत्र पर्याप्त आर्थिक संसाधनों से परिपूर्ण है किन्तु फिर भी अत्यंत पिछड़ा है। बुंदेलखंड क्षेत्र में उ.प्र. के महोबा, झाँसी, बांदा, ललितपुर, जालौन, हमीरपुर और चित्रकूट जिले शामिल हैं, जबकि म.प्र. के छतरपुर, सागर, पन्ना, टीकमगढ़, दमोह, दतिया, भिंड, सतना आदि जिले शामिल हैं। बुंदेलखंड क्षेत्र की आबादी चार करोड़ से भी अधिक होगी। जनसँख्या के हिसाब से यह देश का नौवा सबसे बड़ा क्षेत्र होगा। यूं तो बुंदेलखण्ड क्षेत्र दो राज्यों में विभाजित है—उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश, लेकिन भू-सांस्कृतिक दृष्टि से यह क्षेत्र एक दूसरे से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। रीति रिवाजों, भाषा और विवाह संबंधों ने इस एकता को और भी पक्की नींव पर खड़ा कर दिया।

बुंदेलखंड विन्ध्याचल की उपव्यकाओं का प्रदेश है। इस गिरी की अनेक ऊँची नीची शाखाएँ — प्रशाखाएँ हैं। इसके दक्षिण भाग में मेकल,

पूर्व में कैमोर, उत्तर-पूर्व में केंजुआ, मध्य में सारंग और पन्ना तथा पश्चिम में भीमटोर और पीर जैसी गिरी शिखाएँ हैं। यह खंड लहरियाँ लेती हुई ताल-तलैयाँ, बहने वाले नाले और चौड़े पाट के साथ उज्ज्वल रेत पर अथवा दुर्गम गिरि-मालाओं को चीर कर भैरव निनाद करते हुए बहने वाली नदियों का खंड है। सिंध (काली सिंध), बेतवा, धसान, केन तथा नर्मदा इस भाग की मुख्य नदियाँ हैं। इनमें प्रथम चार नदियों का प्रवाह उत्तर की ओर और नर्मदा का प्रवाह पूर्व में पश्चिम की ओर है। प्रथम चार नदियाँ यमुना में मिल जाती हैं। नर्मदा पश्चिम सागर (अरब सागर) से मिलती हैं। इस क्षेत्र में प्रकृति ने विस्तार लेकर अपना सौन्दर्य छिटकाया है। बुंदेलखंड लोहा, सोना, चाँदी, शीशा, हीरा, पन्ना आदि से समृद्ध है। इसके अलावा यहाँ चूना का पत्थर भी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। विन्ध्य पर्वत पर पाई जाने वाली चट्टानों के नाम उसके आसपास के स्थान के नामों से प्रसिद्ध है जैसे — माण्डेर का चूना का पत्थर, गन्नौर गढ़ की चीपें, रीवा और पन्ना के चूने का पत्थर, विजयगढ़ की चीपें इत्यादि। जबलपुर के आसपास पाया जाने वाला संगमरमर भी काफी प्रसिद्ध है। इस प्रांत की भूमि भोजन की फसलों के अतिरिक्त फल, तम्बाकू और पपीते की खेती के लिए अच्छी समझी जाती है। यहाँ के वनों में सरई, सागोन, महुआ, चार, हर, बहेरा, आँवला, घटहर, खैर, धुबैन, महलौन, पाकर, बबूल, करौंदा, सेमर आदि के वृक्ष अधिक होते हैं।

सभी बुंदेलखंड के संबंधित जिलों उनकी अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि पर आधारित है। यहाँ पर जोत उक्त जमीन की कमी, कम उत्पादकता, अनुचित भूमि वितरण जिसमें कुछ मध्यम और बड़े किसानों के पास प्रमुख हिस्सेदारी है, सिंचाई सुविधाओं की कमी, अवैज्ञानिक तरीके से खेती का उपयोग और आधुनिक खेती का उपयोग न करना शामिल है

### सरकारी योजनायें :

बुन्देलखण्ड विकास हेतु निम्न सरकारी योजनाये लागू की गयी है ।

१. जवाहर रोजगार योजना २. एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम (आई आर डी पी ), ३. इंदिरा आवास योजना ४. ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं और उनके बच्चों का विकास (डी डब्लू सी आर ए ) ५. स्व रोजगार के लिए ग्रामीण युवाओं को प्रशिक्षण (टी आर वाय एस ई एम) ६. सुखा प्रवण क्षेत्र कार्यक्रम





# बुन्देलखण्ड के कृषि विज्ञान केन्द्रों की प्रगति आख्या : 2015-16

प्रथम पंक्ति प्रदर्शन (५५०)  
आन फार्म परिक्षण (४५)  
मृदा स्वास्थ्य कार्ड का वितरण (२०३०)  
राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के अंतर्गत दलहन एवं तिलहन का उत्पादन एवं तकनीकी का मूल्यांकन  
अन्य प्रसार गतिविधियाँ  
अन्तर राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन  
निकरा परियोजना के अंतर्गत पशु स्वास्थ्य कम्प का आयोजन

कृषक प्रशिक्षण (४७०)  
किसान गोष्ठी (५५)  
प्रशेत्र दिवस का आयोजन (२४)  
कृषक मेला (७)  
मीडिया कवरेज (५०)  
कृषकों के प्रषेत्र पर वैज्ञानिकों का भ्रमण (८२१)  
पॉपुलर आर्टिकल, न्यूज लेटर एवं लेख  
मोबाइल द्वारा समस्याओं का निवारण (१२००)  
डायग्नोस्टिक सर्विस (३५४)

## राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के अंतर्गत दलहन एवं तिलहन फसलों का क्लस्टर प्रदर्शन



कृ.वि.के. हमीरपुर



कृ.वि.के. हमीरपुर



कृ.वि.के. बाँदा



कृ.वि.के. झाँसी

## कृषक प्रशिक्षण



कृ.वि.के. हमीरपुर



कृ.वि.के. ललितपुर



कृ.वि.के. महोबा



कृ.वि.के. बाँदा

## फसल प्रषेत्र दिवस



कृ.वि.के. हमीरपुर



कृ.वि.के. ललितपुर



कृ.वि.के. झाँसी



कृ.वि.के. बाँदा

## अन्य प्रसार गतिविधियाँ



कृ.वि.के. हमीरपुर



कृ.वि.के. ललितपुर



कृ.वि.के. झाँसी



कृ.वि.के. हमीरपुर

# बुन्देलखण्ड में दलहन और तिलहन फसलों की उन्नतशील खेती

क्र० सं०	फसल का नाम	उन्नतशील प्रजातियाँ	बुआई का समय	बीज दर (कि०ग्रा०/हे०)	छूरी (सेमी०)	खरपतवार नियंत्रण
1	मटर	बोने पौधे- इन्द्र, जय, सपना, विकास, मालवीय मटर-15, प्रकाश सब्जी मटर- ए.पी.-1 पिछेती ए.पी.-3 अगेती काशी मुक्ती, नन्दनी	अक्टूबर मध्य से नवम्बर मध्य तक	100	30 x 10	पेंडी मेथलीन 30 ई०सी० 3.3 ली०/हे० बुआई के बाद एवं जमाव से पहले
2	चना	के०जी०डी०- 1168 अवरोधी पूसा- 256, जाकी-9218, देर से उदय	अक्टूबर	80-100	45 x 10	पेंडी मेथलीन 30 ई०सी० 3.3 ली०/हे० बुआई के बाद एवं जमाव से पहले
3	मसूर	आई०पी०एल०-81, डी०पी०एल०-62, आई०पी०एल०-407, जे०एल०-3	अक्टूबर मध्य से नवम्बर मध्य तक	40-60	22.5	पेंडी मिथलीन 30 ई०सी० 3.3 ली०/हे० बुआई के बाद एवं जमाव से पहले
4	उर्द	आजाद उर्द-2 शेखर-1, शेखर-3 आजाद उर्द-3, नरेन्द्र उर्द-1	जुलाई	15	30 x 10	पेंडी मेथलीन 30 ई०सी० 3.3 ली०/ हे० बुआई के बाद एवं जमाव से पहले
5	मूंग (जायद)	सम्राट (पी०डी०एम०-139) (आई०पी०एम०-99-125) (एच०यू०एम०-6)	10 मार्च - 10 अप्रैल	20-25	30 x 10	पेंडी मेथलीन 30 ई०सी० 3.3 ली०/हे० बुआई के बाद एवं जमाव से पहले
6	तिल	टी-78, शेखर, प्रगति, तरुण	अन्त जून से जुलाई	3 - 4	30-45 x 10	निराई गुड़ाई एवं विरलीकरण
7	राई/सरसों	वरुणा, उर्वशी, बसंती कान्ती, क्रान्ति, रोहिणी, माया, पूसा बोल्ड, वैभव आर्शीवाद और पीताम्बरी	सितम्बर के अन्तिम सप्ताह से अक्टूबर का प्रथम पखवारा	5	45 x 15	पेंडी मेथलीन 30 ई०सी० 3.3 ली०/हे० बुआई के बाद एवं जमाव से पहले

क्र० सं०	फसल का नाम	सिंचाई	रोग एवं कीट नियंत्रण	उपज (कु०/हे०)	प्रभावी बिन्दु
1	मटर	फूल और दाना भरते समय	बुकनी रोग- कार्बाडाजिम 500 ग्राम प्रति हे० फली बंधक- इन्डोक्साकार्ब 14.5प्रतिशत 1 एमएल/ली० पानी छिड़काव	25-32 दाना	ग्रीष्म कालीन जुताई, समय से बुआई, जैव उर्वरकों का प्रयोग
2	चना	फूल आने से पहले एवं दाना भरते समय	फली बंधक- इन्डोक्साकार्ब 14.5प्रतिशत 1 एमएल /ली० पानी छिड़काव	20-24 दाना	ग्रीष्म कालीन जुताई, समय से बुआइ, जैव उर्वरकों का प्रयोग। ट्राइकोडरमा से बीज उपचार, उचित जल निकास
3	मसूर	फूल आने से पहले एवं दाना भरते समय	माहू कीट - डाइमथोएट 1 ली० प्रति हे०	18-20	ग्रीष्म कालीन जुताई, समय से बुआइ, जैव उर्वरकों का प्रयोग। ट्राइकोडरमा से बीज उपचार, उचित जल निकास, दीर्घ कालिक फसल चक्र
4	उर्द	वर्षा के अभाव में फली बनते समय	पीला चित्रवण रोग - रोग रोधी प्रजातियाँ रस चूसने वाले कीट- डाइमथोएट-30 ई०सी० 1 ली० / हे०	12-15	ग्रीष्म कालीन जुताई, मुजैक अवरोधी प्रजाति, उचित जल निकास, जैव उर्वरकों का प्रयोग
5	मूंग (जायद)	सिंचाई बुआई के 25 से 30 दिन बाद	पीला चित्रवण रोग-रोग रोधी प्रजातियाँ, रस चूसने वाले कीट- डाइमथोएट-30 ई०सी० 1 ली० / हे०	10-14	दीर्घ कालिक फसल चक्र, उचित जल निकास
6	तिल	फली पकने की अवस्था में बारिश न हो तो सिंचाई	फाइलोडी,, मिथाइलओडेमेटान-1 ली० /हे०	6 - 9	विरलीकरण बुआई के 15 से 20 दिन बाद उचित जल निकास, ग्रीष्म कालीन जुताई
7	राई/सरसों	फूल आते समय एवं दाना भरते समय	आरा मक्खी एवं बालदार सूड़ी- क्लोरपाइरीफास 1 ली०/हे० चूसक कीट-डाइमथोएट 30 ई०सी० 1 ली०/हे०	22-28	विरलीकरण, 1शीजीव निरीक्षण



# प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना का शुभारम्भ (३० मार्च से ५ अप्रैल, २०१६)



इस अवसर पर सुश्री उमा भारती, मंत्री (जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण), उप महानिदेशक (कृ. प्रसार), नई दिल्ली, कुलपति, च.शे.आ.कृ.वि.वि, कानपुर, निदेशक, आई.सी.ए. आर. – अटारी कानपुर व अन्य उपस्थित





29-30 March, 2016

## Bundelkhand Krishi Pradarshani Evam Gosthi at Lalitpur

A two days Bundelkhand Krishi Pradarshani evam Gosthi was organized by ICAR-Agricultural Technology Application Research Institute (ATARI), Kanpur at Tuan Maidan, Lalitpur from 29-30 March, 2016. The Pradarshani was inaugurated and Chaired by Ms Uma Bharati Ji, Hon'ble Union Minister of Water Resources, River Development and Ganga Rejuvenation. The programme was also attended by the dignitaries like Deputy Director General (AE), ICAR, Dr. AK Singh; Vice-chancellor, CSAUT, Kanpur, Dr. SL Goswami; Director, ICAR-CAFRI, Dr. OP Chaturvedi; Project Director, DKMA, ICAR, Dr. Rameshwar Singh; CPRO of ICAR, Sh. Anil Sharma; OSD to the Hon'ble Minister Ms. Nandita Pathak and others.



Total of eight ICAR Institutes, 10 KVKs and six agribusiness houses, NABARD, State Department of Agriculture from the states of 15 districts of Uttar Pradesh and Madhya Pradesh participated in this Pradarshani and displayed their technologies, information, products, schemes, etc for the benefit of large number of farmers (approx. 2200) from Lalitpur, Jhansi, Banda, Mahoba, Hamirpur, Chitrakoot and Jalon districts of Bundelkhand region of Uttar Pradesh.



She shared with the farmers that it was the farmers of Lalitpur district whose plight made it possible to convince the Hon'ble Prime Minister of India for giving thoughts on comprehensive Fasal Beema Yojana for the farmers. She also appreciated the concern of Hon'ble Union Minister of Agriculture and Farmers' Welfare Sh. Radha Mohan Singh Ji who being the farmer himself could understand the pains of sufferings of farmers in case of loss of crops due to weather calamities. She also gave the credit to the farmers of Jhansi and Lalitpur district for implementation of this Nation-wide ambitious scheme.



On this occasion, Hon'ble chief Guest also released the Smarika, Newsletter of ICAR ATARI, Kanpur and the extension bulletin on 'Bundelkhand mein Chana ki Kheti' Dr. AK Singh, DDG (AE), ICAR at the outset welcomed the Chief Guest and other dignitaries and Dr. SL Goswami, VC, CSAUT, Kanpur proposed the vote of thanks

01 & 28-29 January 2016

## Review of Rabi Pulses



Photo 1 & 2 : Dr. AK Mehta, National Consultant (Extn.), National Food Security Mission (GoI), Min. of Agril. Krishi Bhavan, New Delhi, cluster demonstration of pulses visited on 29.1.2016 at KVK Allahabad (U.P.)  
Photo 3 & 4 : Dr. Dr. M.C. Diwakar (Director DSD) Field Visit of pulses & Oilseeds at Pratappgarh (U.P.) on 12-13.02.2016

Dr. A.K. Mehta, former ADG (AE), ICAR visited chickpea (Jaki 9218) & Lentil (IPL-P1) fields at district Allahabad where demonstrations were placed on farmers field of Shri Gyam Singh & Shri Gomati Parsad respectively. He also travelled to district Varanasi and visited village Bhupatpur to see chickpea (9218) and fieldpea (Prakash & Vikas on farmers field. Dr M.C. Diwakar, Director, DSD have also reviewed farmers fields of pulses (Pea-Aman) and oilseeds (Mustard – CS-56) on 12-13 Feb., 2016 at distt. Pratappgarh (U.P.).



Lentil performance visit on 27-29, Jan, 2016 at Meerut & Muzaffarnagar by ICAR-ATARI, Kanpur officials

18-22 January, 2016

## Management Development Programme for Heads of KVKs (III Leg)

Heads of KVKs of Meerut, Gajipur, Jaunpur & Pithouragarh attended the last phase (III leg) of IIIrd management development programme for Heads of KVKs organized by NAARM, Hyderabad during the period of 18-22 January, 2016 at ICAR-ATARI, Kanpur. During this phase of training they were exposed to various topics like based line data collection, understanding OFT, leadership attributes, different administrative Issues at KVKs, U.C. & AUC related matters, farmers participatory, seed production, farmer to farmer diffusion of quality seed etc.

28th January, 2016

## Approval of ARYA Project for Zone-IV

A one day meeting was held on 28th January, 2016 at NASC, New Delhi to review the proposals for funding by ICAR under ARYA Project. Total 25 such proposals from various states of India were reviewed. From this zone, KVK Muzaffarnagar and KVK Haridwar were approved with this project. Under this project these KVKs shall be working on three major enterprises namely, bee keeping, mushroom cultivation & backyard poultry rearing for generating adequate employment and raising their income by creating entrepreneurship among the selected rural youth.

8th March, 2016

### Celebration of International women Day

International women day was celebrated at this office on 08.03.2016. On this occasion the participating scientist & staff of this institute share their views that how gender has been used as socially differentiated roles rather than bio-logically scripted roles of men and women. It was also highlighted that historically, how women were socio-economically as well as politically empowered in the past.



With reference to farm women, Director, ICAR-ATARI stated that they need to be technologically empowered for raising farm and house hold income and living standards. On this occasion two lady staff of this institute Ms Kratika Sharma, Assistant and Ms Vaishnavi Rai, Data Entry Operator (Pulses) were facilitated.

13, March, 2016

### Celebration of International Pulse Year – 2016



Hon'ble Shri Radha Mohan Singh, Minister of Agriculture and Farmers' Welfare, GoI, New Delhi inaugurated the international pulse year on 13.03.2016 at ICAR-IIPR, Kanpur. In his address the Hon'ble Minister called upon the scientists to develop short duration varieties of pulse crops to foster multiple cropping systems. He stressed upon developing high yielding varieties insulated with pest and disease resistance, with toning crop production and protection technologies. He called for minimizing the post-harvest losses. Focusing upon the research priorities, the Hon'ble Minister urged the scientists to develop pulse varieties and matching production technologies keeping in mind the changes climate in seasons. He called for preparing a road map for increasing pulse production by stressing on short, medium and long term research efforts. At this occasion, a farmers' friendly bulletin on Unnat Dalhan Utpadan Prodikiyon ka Sarwajanikaran was also released by the Hon'ble Minister.

### DG Visit at ICAR-ATARI, Kanpur



Dr. Trilochan Mohapatra, Secretary, DARE and DG, ICAR visited ICAR-ATARI, Kanpur on 13/3/2016. While addressing the gathering of scientists and staff of ATARI, and the scientists from the Krishi Vigyan Kendra of Uttar Pradesh, Dr. Mohapatra appreciated the efforts of KVKs at the district level for doing the job of technology assessment and frontline demonstrations. However, he reiterated that training is the most important component for any KVK and it has to be made more effective by linking the trained farmers to various value chains of a given commodity or enterprise in which the entrepreneurial training was imparted. He suggested three guiding framework for effective performance of KVK. Firstly, every KVK must focus on bringing more visibility of their works in the district. The use of mass media – both print and electronic may be best means in this direction. Secondly, there should be tripartite MoU between the KVKs, ATARI and the Heads of state agricultural and allied departments for convergence and out-scaling of at least the five technologies assessed as most appropriate for every district by the respective KVKs. Thirdly, every KVK must be responsive to any external source of resources for executing their activities.

9-10 Feb, 2016

### Brain storming session Promotion of pulses in new niches: Summer cultivation

The two day meeting on said brain storming session was held at ICAR-IIPR on 9-10 February, 2016. In this meeting the account given on spring cultivation of moong bean & urd bean is being cultivated is an area of 9.0 lakh in the country. Specially, in the state of Andhra Pradesh, Assam, Gujarat, Bihar, Haryana, Madhya Pradesh, Punjab, Tamil Nadu, Telangana, Uttar Pradesh & West Bengal. It has been decided that green gram will be given nomenclature as moong bean and summer will be known spring season.

20-21 February, 2016

### Participation in 4th National Symposium of SAP, CSAUAT, Kanpur at Jhansi (U.P.)

A two days 4th National symposium on 'Transforming Indian Agriculture towards food & National Security' was organised by SAP, CSAUAT, Kanpur in collaboration with ICAR-IGFRI, Jhansi and Range Management Society of India, Jhansi from 20-21 Feb., 2016. In this symposium Dr. U.S. Gautam and Dr. S.K. Dubey presented the lead paper on 'Skill Empowerment in Agriculture Sector : Needs and related Dimensions'. Dr. Atar Singh, PS (Agron) also attended this symposium.

23, February, 2016

### Sanction of Extra Mural Project

A research project on 'Value Chain Analysis of Selected Agricultural Commodities in the state of Uttar Pradesh. & Uttarakhand' has been sanctioned for extramural funding by the Division of Agriculture Extension, ICAR, New Delhi. This project shall include the commodities namely, potato, vegetable pea, off season vegetables and banana. Dr. Shantanu Kumar Dubey, Principal Scientist (AE), ICAR-ATARI is a PI of this project who will be assisted by Co-Pis from the identified KVKs – Pratapgarh, Jalaun, Chhapawat, Kushinagar & Kannauj as well as from Division of Agricultural Extension, ICAR-IARI, New Delhi

2-4 March, 2016

### Fourth Agricultural Science Congress

In the two days 4th Uttar Pradesh Agriculture Science Congress organised at CSAU, Kanpur by UPKAR, Lucknow and UPAAS, Lucknow from 2-4 March, 2016. Dr. U.S. Gautam, Director, ICAR-ATARI, Kanpur and Dr. S.K. Dubey, PS (AE) presented the lead paper on 'Taping the Youth Potential in Indian Agriculture : Concerns & Options'. Dr. Gautam also acted as co-chairman in one of the technical sessions focussing on extension education which was chaired by Dr. A.K. Singh, DDG (AE), ICAR and convened by Dr. S.K. Dubey, PS (AE), ICAR-ATARI, Kanpur

14, March, 2016

### Cluster FLD review meeting at NASC, New Delhi

FLD review meeting was held during 14, March, 2016 and proposal for FLD on Pulses and Oilseeds was finalized during 16-17 March, 2016. The meeting was chaired by DDG(AE), ICAR. Agriculture commissioner, GoI; Joint Commissioner FLD, Ministry of Agriculture & Farmers Welfare, GoI; ADG (AE) and all Directors of ICAR-ATARI participated. All the Directors of ICAR-ATARI made a presentation for progress report of cluster front line demonstrations 2015-16 and proposal of FLD during 2016-17 was discussed & finalized.

19-21 March, 2016

### Participation in Krishi Unnati Mela at Pusa, New Delhi

A three days Krishi Unnati Mela was organised at ICAR-IARI, Pusa, New Delhi which was inaugurated by Hon'ble Prime Minister of India. ICAR-ATARI, Kanpur facilitated for the participation of 5329 farmers from 14 districts of Uttar Pradesh. These districts were Meerut, Baghpat, Muzaffarnagar, GB Nagar, Ghaziabad, Bulandshahar, Pilibhit, Bijnour, Rampur, Moradabad & Kanpur Dehat by arranging 103 buses for the above farmers.



## Director's Desk



The second issue of ICAR-ATARI, Kanpur newsletter is in your hand. During this period, our institute and KVKs of Uttar Pradesh and Uttarakhand have executed various on-farm activities and institutional works. During this period, several events happened which were of professional and farmers' interest. This issue of Newsletter focuses on the Bundelkhand region of Uttar Pradesh. We know the country is under severe crisis of pulses production and availability. As a result, the Nation has to depend on large quantity of pulses being export from other countries, thus getting huge loss on country's financial exchequers.

Bundelkhand region comprises of 13 districts. Out of which, 7 are in the state of Uttar Pradesh and 6 are in Madhya Pradesh. These seven districts of Bundelkhand region of Uttar Pradesh has got distinct agro-ecological and socio-cultural scenario. Despite the fact that the region has adverse climatic condition, it is most suitable for pulses production. The major pulse crops of the region are chickpea, lentil and field pea. Due to several biotic and a biotic stresses, pulses are constantly getting marginalized. The productivity of pulse crop in the region is minimal. There are several programmes by Government of India and other development agencies being implemented in the region which are specifically focusing on improving pulses productivity in the region. In this regards, ICAR has sponsored the National Food Security Mission for pulses in which provision has been made for cluster demonstrations of improved pulses varieties and the local specific packages. All the seven

KVKs of Bundelkhand region have been covered under cluster demonstrations of pulses.. These KVKs are constantly trying for improving pulses productivity through conducting frontline demonstrations, technology assessment and capacity building for farmers, farm women, rural youth and extension functionaries.

Another effort by ATARI in this direction is organizing two days Bundelkhand Krishi Pradarshani evam Gosthi on 29-30 March., 2016 at Tuan Ground, Lalitpur. This mela is focusing on the major issues of Bundelkhand region like drought and water management, improving productivity of pulses and oilseeds, livestock development, promotion and vegetables, fruit production and socio-economic empowerment of rural women in the region. Total of 12 ICAR research institutes besides 13 KVKs from UP and MP were participated in this event.

It is also important to mention here that this institute has maintaining functional Linkages and coordination with different line departments, research institutions and SAUs such as IIT, Kanpur; ICAR Research Institutes of U.P. and Uttarakhand, MANAGE Hyderabad, Nehru Yuva Kendra and SAUs of both the states for different purposes, activities and technological backstopping as well convergence of activities..

I heartily congratulate the scientists and staff of ICAR-ATARI, Kanpur and Heads of KVKs of this zone for their industrious efforts and initiatives taken for bringing out the second issue of the institute magazine. I wish all success in their endeavors in future also.

**Dr. U.S. Gautam**

### Published by

**Dr. U.S. Gautam**

Director, ICAR-Agricultural Technology Application Research Institute, Kanpur, 208 002

**Chief Editor :** Dr. U.S. Gautam, Director

**Editors:** Dr. Atar Singh, Principal Scientist (Agron), Dr. S.K. Dubey, Principal Scientist (AE), Mr. Yemul Sanjeev N., Chief Technical officer

**Technical Support :** Dr. Ajit Kumar Srivastava, Mr. Vinay Dhar Shukla, Mr. K.K. Bajpai & Mr. Avanish K. Singh

**Phone :** 0512-2533560, 2554746 Fax: 0512-2533560; email: zpdicarkanpur@gmail.com, website: <http://atarik.res.in>